हिन्दुस्तान

www.livehindustan.com बुधवार, 23 मार्च 2011 नई दिल्ली, नगर, वर्ष 76, अंक 69, 20 पेज+ 4 पेज नई दिशाएं, चैत्र, कृष्णपक्ष, चतुर्थी, विक्रम संवत 2067, मूल्य 3.50 रुपए / हिन्दुस्तान टाइम्स के साथ मूल्य 6.00 रुपए

आयुर्वेद से तैयार होंगी एलोपैथी दवाएं

मदन जैड़ा

नई दिल्ली

आयुर्वेद के फार्मूलों पर विदेशों में धड़ाधड़ एलोपैथी दवाएं बन रही हैं। वैज्ञानिक एवं औद्योगिक अनुसंधान परिषद (सीएसआईआर) ने ऐसी छह सौ दवाओं को रद्द कराने की प्रक्रिया शुरू की है जिसमें 33 मामलों में सफलता मिली है। इससे सीएसआईआर की भी आंखें खुल गई हैं। उसने भी दो हजार आयुर्वेद फार्मूलों से एलोपैथी दवा बनाने का फैसला किया है। सीएसआईआर ने ट्रेडिशनल नॉलेज लाइब्रेरी (टीकेडीएल) के जरिए 2.26 लाख आयुर्वेद और यूनानी देसी फार्मूलों को संरक्षित किया है। टीकेडीएल में इन्हें पेटेंट स्वरूप में कई भाषाओं में डिजिटल किया है। इसके जरिए एक तरफ विदेशों में इन फार्मूलों पर बन रही दवाओं के पेटेंट रद्द कराए जा रहे हैं तो दूसरे तरफ सीएसआईआर ने इनमें एक फीसदी फार्मूलों से खुद भी एलोपैथी दवा बनाने की तैयारी कर ली है। सीएसआईआर की प्रयोगशालाएं यह कार्य करेंगी।

क्या है टीकेडीएल

आयुर्वेद, यूनानी तथा सिद्ध पैथियों के 2.26 लाख परंपरागत चिकित्सा फार्मूलों को इसमें डिजिटल और पेटेंट फार्मेट में रखा गया है। फार्मूले अंग्रेजी के अलावा फ्रेंच, जर्मन, स्पेनिश तथा जापानी भाषाओं में हैं। यूरोप, यूएस, कनाडा, आस्ट्रेलिया, ब्रिटेन के पेटेंट कार्यालयों से टीकेडीएल का समझौता हो चुका है। अन्य देशों के पेटेंट कार्यालयों से भी ऐसे समझौते किए जा रहे हैं। समझौते के तहत टीकेडीएल में वर्णित फार्मूले पर कोई भी देश किसी कंपनी को पेटेंट नहीं दे पाएगा।

फायदा क्या हुआ

कुछ साल पहले यूरोप में नीम पर और अमेरिका में हल्दी पर पेटेंट कर लिए गए थे। तब भारत को इन्हें खारिज कराने में मुकदमा लड़ना पड़ा था, जिसमें दस साल लगे और करीब दस करोड़ रुपये खर्च हुए। लेकिन टीकेडीएल के बनने के बाद अब जो पेटेंट खारिज हो रहे है, उनमें न तो मुकदमा लड़ना पड़ता है न ही समय की बर्बादी होती है। सिर्फ ई-मेल आब्जेक्शन से ही इन्हें खारिज किया जा रहा है।

33 पेटेंट अब तक खारिज

टीकेडीएल से खरबूजे के छिलके, कमल, अश्वगंधा, अर्जुन, चाय की पत्तियों, ब्राह्मी, हल्दी, बंगाली चने, नीम, अलोवेरा, पुदीना तथा कलामेघा के औषधीय तत्वों आदि से बनी 33 दवाओं दवाओं के पेटेंट यूरोप, ब्रिटेन और अमेरिकी पेटेंट आफिसों से खारिज कराए हैं। जबकि छह सौ पर दावा किया गया है।

सीएसआईआर के महानिदेशक समीर. के. ब्रह्मचारी ने बताया कि हम जल्द इस बारे में एक कैबिनेट नोट भेज रहे हैं। इनमें से उन फार्मूलों को छांटा जाएगा, जिनसे गरीबों के लिए दवा बनाई जा सके। मसलन, टीबी, मलेरिया, डेंगू, कालाजार आदि जैसी बीमारियों की दवाएं ढूंढ़ी जाएंगी। करीब दो हजार फार्मूलों से एलोपैथी दवाएं बनाएंगे। टीकेडीएल के निदेशक वी. के. गुप्ता के अनुसार 12वीं योजना में इसके लिए करीब 2000 करोड़ रुपये की परियोजना तैयार की गई है। गुप्ता के अनुसार दुनिया के मशहूर फार्मा कंपनियां आयुर्वेद फार्मूलों के पीछे पड़ी हैं।